~~91148~~

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २६ अंक : ९

दिसम्बर २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ अंक - ९, दिसम्बर २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-238-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३८७
२.	तमिलनाडु में जैन धर्म		३९५
२.	कुण्ड कोलिक श्रावक	नरेन्द्र सिंह जैन	४००
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		४१०

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

नीचे के ढ़ेर में कुछ अधिक चावल रखें। नीचे के ढेर में स्वास्तिक, मध्य के तीन ढ़ेर सम्यगदर्शन, सम्यगज्ञान और सम्यग चारित्ररूप में बनाये। ऊपर अर्धचन्द्राकार सिद्ध शिला बनावें। देव, मनुष्य, पशु और नारक इस प्रकार चार गति रूप स्वास्तिक का चार पंख समझे।

भगवान की पूजा में गेहूं, चना, उढ़द, मूंग आदि धान्य का प्रयोग नहीं होता है मात्र चावल ही ग्रहण किया गया है क्यों कि चावल सर्वोत्तम अन्न और पुनः जन्म न लेनेवाला अजन्मा अन्न है। अन्य कोई विशिष्ट विधान में विभिन्न धान्य का व्यवहार होता है।

नैवेद्य पूजा–शुद्ध मिठाई (नैवेद्य) हाथ में या थाली में लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर नैवेद्यपूजा करें। नैवेद्यस्वास्तिक के मध्य में रखे।

नमोर्हत् ....

अणाहारी पद में किया विगई गई अनन्त।

दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिवसंत।।

ॐ ह्रीं .... नैवेद्य यजामहे स्वाहा।

नैवेद्य (मिठाई) पूजा करते समय निम्नोक्त भावना मन में लावें।

हे प्रभु.......! एक जन्म से अन्य जन्म में जाते समय मैं अनेक बार अनाहार अवस्था में रहा हूँ, पर जन्म होते ही पुनः आहार की इच्छा हो जाती है। हमें ऐसी शक्ति दे कि अनाहारी पद अर्थात् मोक्षपद को उपलब्ध कर सकूं।

जो वस्तु हम खाये या नया लावे, घर में तैयार करें, वे सबसे पहले मंदिर में भगवान को अवश्य अर्पण करें। मंदिर में अभक्ष्य, त्याज्य, दुर्गन्ध युक्त निद्यनिय, वस्तु न चढ़ावें। मिसरी नैवेद्य के रूप में चढ़ाया जा सकता है। शुभ प्रसंग में बने हुए भोजन की थाली भी भगवान को चढ़ानी चाहिए। चाकलेट लोजेन्स, बिस्किट आदि मंदिर में न चढ़ावे।

फल पूजा—थाली या हाथ में उत्तम फल लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर फल पूजा कर फल सिद्ध शिला में रखें।

नमोर्हत् ....

इन्द्रदिक पूजा भणी, फल लावे धरीराग।

पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवसुख त्याग।।

ॐ ह्रीं .... फलं यजामहे स्वाहाः ।

फल पूजा करते समय निम्नोक्त भावना मन में लावें ....।

हे परम तारक —— ! इन्द्रादिक जैसे उत्तम भाव से उत्तम फल लाकर आपकी पूजा करते है, वैसे ही मैं भी फल पूजा करके मोक्षरूपी फल की कामना करता हूँ।

फल, उत्तम, मीठा, सुन्दर ग्रहण करें। त्याज्य, निन्दनीय फल से भगवान की पूजा करना अनुचित है। मौसम के अनुरूप उत्तम फल से प्रभु की पूजा करें।

उपरोक्त आठ पूजा को अष्ट प्रकारी पूजा करते है। इसके अतिरिक्त दर्पण, चामर, पंखा, पूजा का भी विधान है। वे पूजा अष्ट प्रकारी पूजा के बाद करनी चाहिए।

दर्पण पूजा— दर्पण प्रभु सन्मुख रखकर निम्नोक्त दोहा बोलकर पूजा करें।

नमोर्हत ....

प्रभु दर्शन करने हेतु दर्पण पूजा विशाल ।

आत्मदर्पण से देखे, दर्शन दो तत्काल।।

ॐ ह्रीं .... दर्पण यजामहे स्वाहा :।।

हे प्रभु......! मेरा जीवन भी काँच जैसा पारदर्शक बनें। मैं भी सभी कर्म मल को धोकर जीवन निर्मल बनाकर परम पद की उपलब्धि करूँ।

चामर पूजा—हाथ में चामर लेकर प्रभु के सन्मुख झुलावे, नृत्य करें, उल्लास पूर्वक प्रसन्नता प्रगट करें।

नमोर्हत् ....

नाच नाचे संसार में, भव अनंति बार।

चार गति निवारने को प्रभु तू एक तारण हार।।

ॐ ह्रीं .... चामर यजामहे स्वाहा।

पंखा पूजा — हाथ में पंखा लेकर भाव पूर्वक श्रद्धापूर्वक प्रभु सम्मुख पंखा हिलावे।

नमोर्हत् ....

जीवास्थिरता कारण रोग-शोक महाजंजाल।

साता साता कर्म से, मुक्ति दे दीन दयाल।।

ॐ ह्रीं .... पंखा यजामहं स्वाहा ।।

हे प्रभु .... ! आपने जैसी महाशांति की अनुभूति की वैसी ही महाशांति की अनुभूति मुझे हो ऐसी स्थिरता और शक्ति दें।

परमात्मा की पूजा भक्ति करते हुए अगर शुद्ध भावना न आती हो, मन प्रसन्न न होता हो तो, आप समझे कि पूजा में कहीं न कहीं गलती हो रही है। क्यों कि प्रभु की भक्ति में मन निर्मल होना ही चाहिए। अगर हमारा मन परमात्मा के प्रति समर्पित नहीं है तो इस संसार में कोई भी शक्ति सम्पत्ति, या सत्ता परम शान्ति देने में समर्थ नहीं हो सकती है।

मंदिर में पूजा करते समय तन और मन को शुद्ध रखने के लिए दश प्रकार का नियम पालन करने का निर्देश दिया गया है। जिसे शास्त्रीय भाषा में दशत्रिक कहते है। इस दशत्रिक को मंदिर का अनुशासन सूत्र समझे। इन नियमों को पालन करने से मन में निश्चित रूप से शांति आयेगी तथा व्यवस्था में कोई व्यवधान नहीं आवेगा। इससे मंदिर का संविधान समझे।

दशत्रिक—

१. निसीहित्रिक
२. प्रदक्षिणात्रिक
३. प्रणामत्रिक
४. पूजात्रिक
५. अवस्थात्रिक
६. दिशात्यागत्रिक
७. प्रभार्जनत्रिक
८. आलम्बनत्रिक
९. मुद्रात्रिक
१०. प्राणधानत्रिक

१. निसीहत्रिक— संसार के आरंभ समारंभ से निवृत्ति को निसीहि कहते है। मंदिर, उपाश्रय या अन्य धार्मिक स्थानों में प्रवेश करते समय क्रमिक तीनवार निसीहि बोलना चाहिए।

प्रथम निसीहि— मंदिर में प्रवेश करते समय यह निसीहि बोलने के बाद संसार की सभी बाते भूल कर मंदिर सम्बन्धित विषय का चिन्तन करना चाहिये। मंदिर का निरिक्षण करें, मंदिर व्यवस्था कोई अव्यवस्था हो, दर्शक पूजक को असुविधा हो तो पुजारी या सम्बन्धित व्यक्ति को लिखित या मौखिक सूचना करें। अपने से संभव हो तो स्वयं उस अव्यवस्था को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। मंदिर में क्लेश या अशांति का कारण न बनें।

द्वितीय निसीहि— मूल गभारे में (मूल-गर्भगृह) प्रवेश करते समय यानि द्रव्य पूजा करने से पूर्व यह निसीहि बोले। इसके बाद सभी बातों को भूल कर स्वयं, भगवान और पूजा सामग्री तक ही विचारों को सीमित बना रखें।

तृतीय निसीहि— चैत्यवंदन, भावपूजा करने से पूर्व यह निसीहि बोले। इसके बाद स्वयं का भगवान से अभिन्न सम्बन्ध स्थापित करें। अन्य सभी बाह्य पदार्थ को भूल जावें। सभी पूजा विधि क्रम बद्ध ही करें।

२. प्रदक्षिणात्रिक— प्रदक्षिणात्रिक का विषद वर्णन पूर्व में किया गया है

३. प्रणामत्रिक— स्वयं को नम्र और समर्पित बनाकर पूज्यपद में भावपूर्वक मस्तक झुकाने की प्रक्रिया को नमस्कार कहते है।

अर्जलिबद्ध प्रणाम— मंदिर में प्रवेश करते हुए प्रथम प्रभुदर्शन के समय, दूर से मंदिर के शिखर के दर्शन के समय इस मुद्रा में नमो जिणाणं, बोलकर प्रणाम करें। रास्ते में या उपाश्रय में गुरु म० सा० के प्रथम दर्शन होते समय मत्थयेण वन्दामि, और साधर्मिक भाई के मिलन के समय में जय जिनेन्द्र बोलकर इस मुद्रा में प्रणाम करें।

अंजलिमुद्रा स्थिति—दोनों हाथ जोड़कर ललाट स्पर्श कराते हुए मस्तक को कुछ झुकाना।

अर्धावनत प्रणाम—मंदिर के मूल गभारे में प्रवेश करते समय, परमात्मा की स्तुति करने से पूर्व इस मुद्रा में प्रणाम करके मूल गभारे में प्रवेश करे या भगवान की स्तुति करें।

अर्धावनत प्रणाम स्थिति— अंजलिबद्ध प्रणामवत् पर शरीर को कमर से आधा से अधिक झुकावें।

पंचांग प्रणिपात प्रणाम—चैत्यवंदन, गुरुवंदन, इरियावहि, करते समय इस मुद्रा में खमासमण सूत्र बोले।

पंचांग प्रतिपात प्रणाम स्थिति–दो हाथ, दो घुटने और मस्तक ये पाँच अंग को भूमिस्पर्श कराना।

४. पूजात्रिक— अंग पूजा जिस पूजा में भगवान का अंग स्पर्श होता है, उस पूजा को अंग पूजा कहते है जैसे – जल पूजा, चन्दन पूजा, पुष्प पूजा, वासक्षेप पूजा आदि। इस पूजा से विघ्न और शरीर का रोग नाश होता है। इस पूजा को विघ्नोपशामिनी कहते है।

अग्रपूजा— जो पूजा भगवान के सन्मुख रंगमंडप में किया जाता है, इससे अग्रपूजा कहते है। जैसे–धूप पूजा दीपपूजा, अक्षत पूजा, नैवेद्य पूजा, फल पूजा, आदि इस पूजा से जीवन में अभ्युदय और मनोकामना पूर्ण होती है। इससे अभ्युदय कारिणी कहते है।

भाव पूजा–जिस पूजा में कोई द्रव्य की आवश्यकता नहीं होती है, मात्र भाव पूर्वक पूजा होती है उसे भाव पूजा कहते है। जैसे–चैत्यवंदन, स्तुति, ध्यान, जाप आदि। इस पूजा से कर्मनाश होकर मोक्षकी प्राप्ति होती है। इससे मोक्षदायिणी कहते है।

इन तीनों पूजा में जितनी पूजा संभव हो उतनी पूजा करनी चाहिए।

५. अवस्थात्रिक— परम तारक प्रभु से एक मेकता उपलब्ध करने के लिए 'अवस्था चिन्तनत्रिक' आवश्यक है। द्रव्यपूजा, अष्टप्रकारी पूजा करने के बाद और चैत्यवंदन विधि से पूर्व अवस्था चिन्तन करना चाहिए।

परमात्मा के जीवन काल के विभिन्न समयकाल के अलग-अलग चिन्तन को 'अवस्था चिन्तनत्रिक' कहते है। स्वयं की जीवन घटनाओं को बारंबार चिन्तन करने से कर्म का बन्ध होता है, पर परमात्मा की जीवन घटनाओं को चिन्तन करने से कामनायें नष्ट होती है।

परमात्मा के जीवन की विशिष्ट अवस्था जैसे जन्म, ५६ दिक्कुमारी का जन्म महोत्सव, ६४ इन्द्र द्वारा मेरू शिखर में अभिषेक, युवावस्था, वैराग्यमय जीवन, भोग में उदासीनता, दीक्षा, ज्ञान, समोवसरण, मोक्ष आदि अवस्था के चिन्तन से जीवन की चिन्ता दूर होती है।

उनके पद चिन्ह में चलने की कामना जगती है।

पिण्डस्थ अवस्था–परमात्मा के जन्म से केवलज्ञान के पूर्वावस्था तक को पिण्डस्थ अवस्था कहते है।

इसको तीन भाग में रखा गया है।

क. जन्मावस्था, ख. राज्यावस्था, ग. श्रमणावस्था।

जन्मावस्था—१४ महास्वप्न दर्शन, जन्म ५६ दिक्कुमारी द्वाराजन्म महोत्सव, ६४ इन्द्र द्वारा मेरुशिखर पर अभिषेक, माता-पिता परिवार जन द्वारा जन्मोत्सव प्रभुजन्म समय में तीनोंलोक में सुख की अनुभूति देवों द्वारा धन की पूर्ति आदि का चिन्तन करते हुए प्रार्थना करें।

हे प्रभु........! आपके इस संसार में पदार्पण होते ही प्राणी जीव भी पाप को भूलकर परम शांति की अनुभूति करते है। मुझे भी ऐसी शक्ति दे कि मैं स्वयं के जीवन में शांति की स्थापना करूं, और अन्य को भी परम शांतिदायक बनाऊँ।

राज्यावस्था—हे प्रभु....! आपके चरणों में लक्ष्मी और सत्ता दासी थी। हजारों क्षत्रिय आपकी सेवा में तत्पर रहतें थे। आप उन सभी को तृणवत् समझकर इन सभी में अनासक्त रहे, ऐसी हमें भी शक्ति दे की आसक्ति से मुक्त होकर अनासक्त पद को उपलब्ध कर उन्मुक्त जीवन का आनन्द उपभोग करूं।

श्रमणावस्था— हे परम तारक, परमात्मन् .....! आपने लोकान्तिक देव के मात्र संकेत से एक वर्ष तक रोज सुबह एक प्रहर १ करोड़ ८० लाख सुवर्ण मुद्रा दान देकर जनता की दारिद्रता नष्ट की थी। लक्ष्मी का सदुपयोग करके बन्धन से मुक्त हो गये। हमें भी ऐसी शक्ति दे कि मेरी कृपणता नष्ट हो और लोकहित में धन का सदुपयोग करूं।

हे प्रभु.......! आप सभी वस्तु को त्यागकर निर्मोही बनकर संसार से पार उतर गये। उपसर्गों से अविचलित रहें। मुझे भी ऐसी शक्ति दे कि संसार का कोई भी कष्ट सहते हुए न घबराऊं और त्यागमय जीवन जीने में समर्थ बनूं।

पदस्थ अवस्था— केवलज्ञान से मोक्ष जाने की पूर्वावस्था तक चिन्तन करें।

हे सर्वदर्शी.......! आपने केवलज्ञान द्वारा विश्व की वास्तविक स्थिति को जानकर समोवसरण में धर्मदेशना देकर भव्य जीवों को कल्याण को मार्ग बताया। अपार करुणा वर्षाये। मुझे भी कृपापात्र बनाकर मेरे हृदय को कोमल, नम्र, शीतल बनाने की शक्ति प्रदान करें।

रूपातित अवस्था—हे निरंजन, निराकार परमपिता ....! हमें भी सभी बन्धनों से मुक्त होकर निराकार पद प्राप्ति की शक्ति प्रदान करें।

दिशि निरीक्षण त्यागत्रिक— प्रभु की पूजा भक्ति के समय परमात्मा के सम्मुख दिशा को छोड़कर अन्य सभी दिशाएं त्याग करें अर्थात् अ दिशा में दृष्टिपात न करें। हमारा मानसिक स्वभाव सहज अन्य को देखने का होने के कारण छोटी भी प्रतिक्रिया होते ही हम उस दिशा में आकर्षित होते है। परिणाम स्वरूप हमारी क्रिया अशुद्ध हो जाती है। दृष्टि की स्थिरता एकाग्रता का एक मुख्य कारण है।

प्रमार्जनत्रिक—कोई भी वस्तु लेते समय रखते समय, उठते बैठते समय तीनबार उस स्थान को साफ करके निरीक्षण करना चाहिए। उठते-बैठते स्वयं के उत्तरासंन से जमीन का प्रमार्जन अवश्य करें। जैन धर्म अहिंसा धर्म है। हमारी क्रिया में कोई भी जीव को हानि न पहुँचे इस बात का ध्यान सबसे पहले रखना आवश्यक है।

आलंबनत्रिक—मन चंचल है। इस मन को कुछ न कुछ कार्य चाहिए। आज प्रायः सभी आराधको का एक प्रश्न होता है मन धर्म क्रिया में स्थिर नहीं होता है। इन सभी प्रश्नकारक को यह तो पता ही नहीं चलता कि वे धर्म क्रिया करते समय मन से क्या काम लेते है। खाली मन शैतान का घर (Empty mind is devils workshop) इसलिए कोई भी कार्य करते समय मन को उचित स्थान पर रखना आवश्यक है। मन, वचन काय को स्थिर करने के तीन आलम्बन है।

प्रतिमा आलम्बन—प्रभु की करुणाभरी आखें, निर्दम्भी होठ, निर्दोष गाल निर्विकारी मुख मुद्रा, निरभिमानी स्कंध, निरीक्षण करते रहें।

सूत्र आलम्बन—प्रतिमा निरीक्षण द्वारा शरीर को स्थिर कर सूत्र के शुद्ध उच्चारण द्वारा सुमधुर स्वर से वचन को अन्य स्थानों में जाते हुए रोकना। सूत्र भी सुन्दर भाव से, सुसंगत, धीरे-धीरे बोले कि अन्य को बाधा न पहुँचे।

अर्थ आलम्बन—सूत्र के मूलअर्थ के चिन्तन से मन को स्थिर रखें। क्यों कि मात्र सूत्र बोलने से मन और कहीं भटकता रहता है। सूत्र के साथ साथ अर्थ का चिन्तन मन को स्थिर करना है।

मुद्रात्रिक— धार्मिक हो या संसारिक हर क्रिया में मुद्रा की आवश्यकता होती है। कार्य सफलता के लिए मुद्रा का विशेष महत्व है। विशेष आसन मुद्रा से शरीर की आन्तरिक प्रक्रिया में विशिष्ट परिवर्तन आता है। परिणाम स्वरूप मन शांत होता है। अच्छी मुद्रा मन में अच्छी भावना जगाती है। खराब इसके विपरीत फल को देती है।

योगमुद्रा—मुद्रास्थिति—दाहिने पैर के बल बैठ बाँया पैर ऊँचा रखें। दोनों हाथ जोड़कर हृदय के पास रखें।

इस मुद्रा में चैत्यवंदन, जंकिंचि, नमुत्थुणं स्तवन और अन्तिम आधा जय वियराय सूत्र बोले—

मुक्ता सूक्ति मुद्रा—योगमुद्रा जैसी ही यह मुद्रा है इसमें हाथ जोड़कर ललाट में रखें। १० अंगुली परस्पर मिलाकर कमल की कली जैसी आकृति बनावे। मुक्तासुक्ति का अर्थ ही होता है सितूक जैसा आकार।

इस मुद्रा में जावंति चेइआई, जावंत केविसाहु और आभवमखंडा तक जय वियराय सूत्र बोला जाता है।

जिनमुद्रा—जिनेश्वर भगवान जैसी मुद्रा-जिनमुद्रा। इसी मुद्रा में जिनेश्वर परमात्मा कायोत्सर्ग ध्यान में रहे थे। इस मुद्रा में कायोत्सर्ग विधि होती है।

मुद्रावस्था—सीधा खड़ा होकर दोनों पैर के बीच आगे के भाग में चार अंगुल और पीछे के भाग में उससे भी कुछ कम दूरी रखें। जो हाथ शरीर को स्पर्श करता हुआ घुटने तक ले जावें। दृष्टि नासिकाग्र भाग में रखे।

क्रमशः

तमिलनाडु में जैन धर्म

(पुनरावृत्ति)

ब्राह्मण विचारधारा के विश्वासी लोगों द्वारा नष्ट हो गये अथवा गौण पड़ गए प्रत्यक्ष अवशेषों के अभाव के बावजूद मदुरा शहर इस बात का परिचायक है कि पांड्य राजाओं की प्रिय इस राजधानी में जैन धर्म एवं उसके मत को काफी प्रोत्साहन के साथ संबंधित किया गया। तेवरम के श्लोकों और मदुरा के स्थल पुराण के अनुसार मदुरा एवं आसपास की पहाड़ियाँ– अन्नमलई, नागमलई एवं पशुमलई जैन धर्म-गुरुओं के गढ़ थे।

मदुरा से थोड़ी दूर पर ही तिरुपरनकुनरम नामक एक पहाड़ी है। यह प्रस्तर अभिलेखों एवं ब्राह्मी लिपि के अभिलेखों के कारण विख्यात है। **'सरस्वती तीर्थ'** के समीप एक ढालूनुमा टीले की काफी ऊँचाई पर पत्थर पर तराशे गये दो चौकोर स्थल हैं। उनमें से एक में एक खड़ी जिन की मूर्ति है। इसके दोनों तरफ सर्प एवं परिचायकों के मनोरम चित्र हैं। दूसरे चौकोर स्थल पर उसी चित्रकारी शैली में जैन देव/देवियों की मूर्तियाँ हैं। पंचमुखी सर्प का चित्र, ऊपर से छत्र आच्छादित एवं परिचारकों के चित्रण की भव्यता उल्लेखनीय है। संभवतः इनमें जिन पार्श्वनाथ एवं सुपार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।

अन्नामलई पहाड़ी मदुरा से छह मील पूर्व की ओर स्थित है। ब्राह्मण विचारधारा के प्रबल प्रभाव के कारण आज यह स्थल यद्यपि ब्राह्मणों के साधु संतों एवं देवमूर्तियों का प्रमुख केन्द्र-स्थल बन गया है तथापि इस स्थान ने जैन धर्म एवं उसकी परम्परा से संबंधित जो साक्ष्य अभिलेख एवं अवशिष्ट मूर्तियाँ सुरक्षित रखी हैं वे अत्यन्त आकर्षण अनिंद्य हैं। कोई इसे अवहेलित नहीं कर पाएगा। जैनों और उनके भगवान की चित्रित मूर्तियों की श्रृंखला पत्थरों पर तराशी गई हैं जो एक प्राकृतिक गुफा के ऊपर लटक रही हैं। इन चित्रों के इर्द-गिर्द कई अभिलेख हैं जिनमें से एक में अज्जानंदी नामक एक प्रचारक का वर्णन उपलब्ध है। इस प्रकार यह तथ्य प्रमाणित होता है कि अन्नामलई जैन धर्म गुरुओं एवं संतों का एक प्रमुख केन्द्र स्थल था।

अलगरमलई नामक पहाड़ी श्रृंखला मदुरा से करीब १२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहाँ एक विशाल गुफा है जिसमें पत्थर के बिस्तर हैं एवं उसके सिरहाने की तरफ ब्राह्मी-अभिलेख अंकित हैं। उसी पत्थर पर और लगभग उसी ऊँचाई पर एक जैन-संत का सिद्धासन की मुद्रा में चित्र अंकित है। उस अभिलेख से पता चलता है कि यह अज्जानंदी की कलाकृति है। शायद यह चित्र उनके धर्म गुरु का है।

पेरियाकुलम तालुक के उत्तमपलइयम में तीर्थंकरों के चित्र पत्थरों पर अंकित हैं जिन्हें '**करुप्पन्नासामी पत्थर**' कहा जाता है।

नीलकोट्टई तालुक के मुट्टुपट्टी के पास लटकता हुआ एक बड़ा-सा पत्थर है जिसने पत्थर के बने विश्राम-स्थलों को जगह दी है। इसी के पास जिन की एक आकृति है जिसमें वह एक सिंहासन पर विराजमान है एवं दोनों ओर शेर एवं अन्य आकृतियाँ मौजूद हैं। यह मूर्ति भगवान महावीर की है।

ऐसे ही एक और पत्थर पर दो अन्य आकृतियाँ बनाई गई हैं। तिरुमंगलम तालुक के कोंगर पुलियांगनम नामक एक साधारण से गाँव में भी इसी प्रकार की आकृतियाँ एवं पत्थर के बने विश्राम-स्थल पाए गए हैं।

मदुरा तालुक के किलाकुड्डी नामक गाँव के निकट उम्मानामलई नामक एक पहाड़ी श्रृंखला है जिसमें सेत्तिपोडावु नाम की एक प्रचलित गुफा है। इस गुफा के आसपास जैन धर्म के कई चिह्न एवं अवशेष मिले हैं।

इस स्थान से और ऊपर की ओर पहाड़ की चोटी पर पेच्छिपालम नाम की एक जगह है जहाँ पूर्व दिशा की ओर मुख किए कई विशाल जिन मूर्तियाँ हैं।

तिरुमंगल तालुक के कुप्पालनट्टम के निकट पोगाईमलई नामक एक पहाड़ी है। यहाँ एक प्राकृतिक गुफा है जिसकी एक दीवार पर जैन तीर्थंकरों की कई आकृतियाँ हैं।

पंचपांडवमलई नामक एक पहाड़ी मेलुर तालुक के किलालवु गाँव से एक मील की दूरी पर है। इसी के पास एक पत्थर पर छः जिन आकृतियाँ अंकित हैं।

मदुरा क्षेत्र में पाए गए अभिलेखों की जाँच करने पर पता चलता है इस स्थान पर कुरुण्डी तिरुकट्टाम्बल्ली नामक एक प्रसिद्ध मठ था एवं कई

प्रमुख प्रचारक भी । अष्टोपवसी एवं उनके शिष्य अरिष्टनेमि भी, उत्तमपलायम के विवरण अनुसार इसी मठ से संबंधित थे। मुट्टपट्टी के अभिलेख के मुताबिक अष्टोपवसी का उल्लेख उनके शिष्यों की दो पीढ़ियों के साथ किया गया है। माघनंदी इसी अष्टोपवसी का एक और शिष्य था। इन अभिलेखों से जैन प्रवर्तकों के तीन पीढ़ियों—गुणसेन-प्रथम, वर्धमान एवं गुणसेन द्वितीय काफी प्रसिद्ध हैं एवं कहा जाता है कि गुणसेन प्रथम इस मठ के मठाधीश थे। यह वही गुणसेन-प्रथम हो सकते हैं जिनका वर्णन पेच्छिपालम पीढ़ियों के जैन प्रवर्तक जिनके प्रमुख कंकनादि थे, का वर्णन भी सेट्टिपोडाबु के अभिलेख में किया गया है, जो इसी मठ से संबंधित थे एवं जो गुणसेन की पीढ़ी के बाद वाली पीढ़ी में शायद आये थे।

एक और खास बात जो इस पुरातन खोज से प्रकाश में आती है वह है अज्जनंदि अथवा आर्यनंदी का महान व्यक्तित्व एवं तमिलनाडु में जैन धर्म के उत्थान में उनका सहयोग। उत्तरी आरकोट के वल्लिमलई की पहाड़ियों में तथा मदुरई जिले के अन्नमलई, अवरमलई, अलगरमलई, करुंगलकुड्डी एवं उत्तमपलईयम में मूर्तियों के अंकन में भी इन्हीं को श्रेय दिया जाता है. दक्षिण की ओर और आगे जाते हुए तिन्नेवेल्ली जिले के इरुवडी में भी हमें उनका वर्णन मिलता है। यहाँ तक कि ट्रावणकोर राज्य के सुदूर कोने में बसे चैतरल के निकट तिरुछन्नट्टुमलई-की पहाड़ियों पर भी अंकित चित्रों में उन्हीं का हाथ माना जाता है। अज्जनंदी का वर्णन हमें आठवीं एवं नवीं सदी में मिलता है।

सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एवं तत्पश्चात् जैन संप्रदाय के अनुयायी लोगों के खिलाफ तमिल प्रदेश में एक गंभीर स्थित सामने आई। कांची इलाके के संत अप्पर एवं मदुरा क्षेत्र के संबंधर ने जैन-अनुयायियों के खिलाफ एक धर्मयुद्ध छेड़ दिया। इन्हीं विपरीत क्षणों में अज्जनंदी के व्यक्तित्व की झलक देखने को मिलती है। अपने धार्मिक ज्ञान एवं अदम्य उत्साह से प्रेरित होकर अज्जनंदी ने देश के कोने-कोने में घूम-घूम कर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया एवं कई मूर्तियों तथा धार्मिक संस्थानों का जगह-जगह उद्धार भी किया।

तिनवेल्ली इलाका : दक्षिण की ओर बढ़ते हुए हम एक और मनोरम पहाड़ी इलाके की ओर आते हैं जिसे जैन धर्म का एक गढ़ माना जाता था।

यह तिनवेल्ली जिले के कोलपट्टी तालुक में बसे कलुगुमलई गाँव के पास की पहाड़ी है। यहाँ पर मिले प्राकृतिक गुफाओं एवं विश्रामस्थलों पर मिले ब्राह्मी अभिलेखों से हमें पता चलता है कि ई० पू० तीसरी सदी में भी यहाँ धार्मिक प्रवर्तकों की पहुँच थी। जैन-मूर्तियाँ थोड़ी ऊँचाई पर लटकते हुए पत्थरों पर खुदाई कर अंकित की गई हैं। काल्पनिक भव्यता एवं बारीकियों के साथ की गई एस चित्रांकन की सुन्दरता एवं अनोखापन वास्तव में काफी दर्शनीय एवं सराहना-योग्य है। चिरकाल तक रहने वाले इस मानवीय हस्तकला का अनूठा प्राकृतिक नमूना जो कि प्राकृतिक सौन्दर्य पर मानव की महानतम विद्वता की जीत का प्रतीक है, दक्षिण भारत में जैन धर्म का एक बेमिसाल उदाहरण है।

अब हम अपनी यात्रा के आखिरी पड़ाव पर दक्षिण भारत के दक्षिण-पश्चिम कोने के पवित्र स्थान पर आते हैं। यह चित्राल के समीप एक छोटी सी पहाड़ी है जो कि त्रावणकोर जिले में विलवांगोद तालुक में पड़ती है। इस पहाड़ी को तिरुचरणत्तुमलई के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ है **'चारणों की धार्मिक पहाड़ी।'** जैन धर्म-शास्त्र के अनुसार **चरण** संतों का ऐसा समुदाय है जिन्होंने प्रकृति को अपने वश में किया था।

पहाड़ी के ऊपर एक प्राकृतिक गुफा है जिसे कालांतर में मंदिर का रूप दे दिया गया। यह अब ब्रह्म-पंथी समुदाय के अधीन है एवं इसे भगवती का मंदिर कहते हैं। यहाँ की मूर्तियों के नजदीकी अवलोकन के बाद इस बात का रहस्योद्घाटन हुआ है कि ये मूर्तियाँ जैन-धर्म के देवता महावीर तथा पार्श्वनाथ की हैं। इसमें शक नहीं कि पहले इस मंदिर में जैन-संप्रदायी पूजा-अर्जना करते होंगे। इस बात का प्रमाण बाहर झूलते पत्थरों पर अंकित जैन-संप्रदाय की मूर्तियों के चित्रण से मिलता है।

चारणों की यह पावन-पहाड़ी पुराने समय से ही जैनियों का गढ़ प्रतीत होता है, क्योंकि यहाँ जैन-धर्मावलंबी सुदूर प्रदेशों से दर्शन के लिए आते थे।

त्रावणकोर इलाके के सुदूर दक्षिणी क्षेत्र में नागरकोल एक बड़ा शहर है। यहाँ का नागराजस्वामी मंदिर अब हिन्दुओं के अधीन है, मगर यहाँ पार्श्वनाथ, पद्मावती एवं महावीर की कई मूर्तियाँ भी मिली हैं जिन्हें मुख्य मठ के स्तंभों पर बने मंडपों पर अंकित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि

पहले यह मंदिर जैन देवी-देवताओं के स्मरण में बनाया गया था। इस बात की पुष्टि वहाँ के शिलालेखों पर भी मिलती है। मंदिर के समीप ही जैन-संप्रदाय के एक विशाल समुदाय के वहाँ बसे होने के संकेत भी मिलते हैं।

इस प्रकार पंद्रह सदियों से कुछ ज्यादा समय तक तमिलनाडु में जैन धर्म का काफी नजदीकी संबंध रहा एवं इसका वहाँ के लोगों एवं संस्कृति पर काफी गहरा असर पड़ा। इस तथ्य का पता तमिल-साहित्य से भी मिलता है जिसमें जैन-धर्मावलंबियों द्वारा लिखित कार्यों एवं उनके विचारों की कई पुस्तकें अभी भी सुरक्षित पाई जा सकती हैं। इस तरह से जैन-धर्म के अनुयाइयों ने तमिल-साहित्य में अप्रतिम सहयोग दिया, जिस पर किसी भी धर्म के अनुयाइयों को गर्व हो सकता है। जैनियों द्वारा लिखे गए कई साहित्यिक कार्य हिन्दुओं के धर्म-पुनरुत्थान के झोंके में नष्ट हो गए और इसी कारणवश आज जैन-साहित्य तमिल भाषा की तुलना में कन्नड़ भाषा में अधिक है। मगर तमिल भाषा में जैनियों द्वारा किए गए कार्य उनके द्वारा चलाए गए धर्म-प्रचार तथा समकालीन कार्यों के अनुरूप ही हैं, जो हजार वर्षों से अधिक समय तक विद्यमान थे।

कुण्डकोलिक श्रावक

नरेन्द्र सिंह जैन

तीसरा अनुच्छेद

इतने ही में दूर से आती हुई पहियों की घरघराहट सुनाई दी। तत्काल ही उसने एक वृक्षपर चढ़कर देखा, तो एक रथ उसी ओर आता दिखाई दिया। अतएव रथ देखते ही वह तुरंत नीचे उतर आया और पूरी शक्ति लगाकर उसके सामने दौड़ चला। थोड़ी देर में वह रथ के निकट जा पहुँचा और रथ हाँकनेवालों को भी ऋषि मानकर उसने कहा,—हे तात! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

ऋषिकुमार! तुम्हें कहाँ जाना है? रथिक ने पूछा।

मेरी पोतन नामक आश्रम में जाने की इच्छा है। महर्षि! आप कहाँ पधार रहे हैं? यह सुन रथिक ने भी विनोद पूर्वक उत्तर दिया,—मैं भी पोतनाश्रम को ही जा रहा हूँ।

वल्कलचीरी निश्चिन्त होकर रथ के साथ साथ चलने लगा।

रथ में रथिक की प्रिया बैठी हुई थी। अतएव उसे भी वल्कलचीरी बारंबार तात! तात! कहकर ही सम्बोधन करने लगा। इस पर उसने अपने पति रथिक से पूछा,—"यह किस प्रकार की वाणी है, कि जिससे यह तापस कुमार मुझे तात, तात कहकर सम्बोधन कर रहा है।"

रथिक ने कहा,—यह बेचारा भोला-भाला है। स्त्रियों से रहित वन में ही निरंतर रहनेवाले इस तापस-कुमार को स्त्री-पुरुष के भेद का ज्ञान नहीं है। इसीलिये यह तुझे भी पुरुष ही समझ रहा है।

इस प्रकार चलते हुए रथ में जुते हुए मृगों को देखकर वल्कलचीरी ने विचार किया कि यह क्या बात है? मुनि के लिये ऐसा करना शोभा दे सकता है? और इसी लिए उसने रथिक से पूछा,-"हे महर्षि! आपने इन मृगों को इस प्रकार क्यों जोत रखा है? इन बेचारे मृगों को इस प्रकार वाहन में जोतना किसी मुनिके योग्य नहीं कहा जा सकता!"

वल्कलचीरी के इस प्रश्न को सुनकर उसकी मुग्धतापर हँसते हुए रथिकने कहा-इन मृगों का यही उपयोग है, इसलिए इसमें कोई दोष नहीं!

इस प्रकार वार्तालाप करते हुए थोड़ा मार्ग तय करने के बाद रथिक ने एक स्थानपर रथ को रोककर खान-पान की तैयारी की।

रथिक के पास लड्डू-पेड़े थे। उनमें से उसने वल्कलचीरी को भी खाने के लिये दिये। उनको खाकर उस मधुर स्वाद के सुख में मग्न वल्कलचीरी ने कहा,-हमारे आश्रममें आये हुए पोतनाश्रम के महर्षि भी एेसेही स्वादिष्ट वनफल लाए थे। अतएव जब मैंने उनके दिये हुए फल खाये, तो अपने आश्रम के बिल्व फल और आँवले आदि फलों से में एकदम उदासीन बन गया। मुझे विश्वास हो गया कि सच्चा स्वाद तो पोतनाश्रम के ही फलों में है और यही एक कारण है कि मैं पोतनाश्रम जाने के लिये उत्सुक हो रहा हूँ।

इस प्रकार रथिक और वल्कलचीरी जब वार्तालाप कर रहे थे। ठीक उसी समय एक चोर पीछे से रथमें चोरी करने के प्रयत्न में लगा हुआ था। अतएव जैसे ही रथिक की दृष्टि उसपर पड़ी कि वह भागने लगा। किन्तु रथिक ने भागते हुए उसे पकड़ लिया और रथिक एवं चोरके बीच भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया।

वल्कलचीरी ने अपने जीवन में पहली ही बार इस प्रकार दो व्यक्तियों को लड़ते हुए देखा था। अतएव उसने चिल्लाते हुए कहा कि,-"हे महर्षियों! आपका इस प्रकार परस्पर प्रहार करना उचित नहीं है!"

वल्कलचीरी के चिल्लाते रहने पर भी युद्ध चलता ही रहा। चोर बड़ा ही बलवान था; इधर रथिक भी कलावान था। अतएव मौका देखकर रथिक ने ऐसा प्रहार किया कि चोर चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ा।

रथिक का यह प्रहार चोर के लिए मृत्युदंड के समान ही था; किंतु वह अपने को बड़ा ही पराक्रमी मानता हुआ भी यह धारणा रखता था कि पराक्रमी पुरुष अपने शत्रु के भी पुरुषार्थ की प्रशंसा ही करते हैं। अतएव बलवान चोर रथिक के पराक्रम पर मुग्ध होकर कहने लगा कि :-

तुमने अपने प्रहार से मुझे परास्त कर दिया, अतः मैं तुम पर प्रसन्न होकर अपना जो विपुल द्रव्य यहां गड़ा हुआ है, वह सब देता हूँ। क्योंकि अब मैं जीवित नहीं रह सकूंगा।

चोर के कहने पर रथिकने वह द्रव्य ग्रहण कर, अपने रथ में रख लिया। किन्तु वह जानता था कि-यह चोरी का धन है और ऐसा धन लेनेवाला भी अन्त में दुखी हुए बिना नहीं रहता । किन्तु आंखों के सामने विपुल द्रव्य को देखकर न ललचाना विरले ही आत्माओं के लिए शक्य हो सकता है।

जानना एक बात और जाने हुए को व्यवहार में लाना दूसरी बात है। दुराचार को निन्दनीय समझने वाले भी उसके लिये मौका पाते ही दुराचार करने में भी प्रवृत्त हो जाते हैं। अर्थात् ऐसे अवसर पर उससे अलग रहने वाले विरले ही होते हैं। ऐसी आत्माओं का अस्तित्व जगत् में सदैव ही नाममात्र का होता है। अच्छी बात को जानने की सच्ची सिद्धि उसे व्यवहार में लाने पर ही आधार रखती है। क्रोध करना बुरा है और अभिमान रखना भी निन्द्य है; इसी प्रकार माया में फँसना भी उचित नहीं; लोभी बनना या विषयासक्त होना भी अत्यन्त निन्दित है; किन्तु यह सब जानते हुए भी इसे बुरा मानकर त्यागने या बचने वाली आत्माएँ इनी गिनी ही होती हैं। अर्थात् निन्दनीय आचरण को त्यागकर उससे विचलित न होने की सावधानी रखने वाले विरले ही देखने में आते हैं।

रथिक ने चोर का एकत्रित किया हुआ वह सब धन लेकर रथ को हाँकना आरंभ किया। किन्तु इस प्रकार आकस्मिक द्रव्य प्राप्ति से उसमें नये ही प्रकार की शक्ति प्रकट हो चली; और उसका प्रथम प्रयोग उसने रथ के घोड़ों पर ही किया।

धन की गर्मी विवेकहीन मनुष्यों का मनुष्यत्व मिटाकर उन्हें पशु बना देती है। उनका मन दुर्विचारों का धाम बन जाता है। वाणी की मृदुता नष्ट हो जाती है। और उसकी काया पाप प्रवृत्तियों में ही संलग्न रहती है। वैसे धन का सदुपयोग भी संभव है और धन के द्वारा सत्प्रवृत्तियां भी हो सकती हैं। इसी प्रकार धन के सद्व्यय से भी स्वोपकारगर्भित परोपकार हो सकता है। किन्तु वह उन्हीं धनिकों के लिए संभव है, जो कि विवेकशील होने के

साथ ही द्रव्यलोलुप नहीं होते। अविवेकी को प्राप्त धन तो उसके स्वतः के लिये तथा अन्य अनेकों के लिए भी श्राप रूप बन जाता है। यहाँ तक कि ऐसे धनिकों के आश्रित पशुओं को भी प्रसंगानुसार भीषण क्रूरता का अनुभव करना पड़ता है।

थोड़ी देर में पोतनपुर के निकट पहुंचने पर रथ को रोककर वल्कलचीरी से रथिकने कहा कि —तापस कुमार! तुम जिस पोतनाश्रम में जाना चाहते हो, वह यही है!

अच्छा, तो मैं जाता हूँ।

लेकिन, तुम कहां जाओगे?

इस आश्रम के महर्षियों के पास!

तो जरा ठहरो, और यह लेते जाओ।

यों कहकर रथिकने वल्कलचीरी को थोड़ा सा धन देना चाहा। क्योंकि इस प्रकार के मुग्ध प्राणियों के प्रति इतनी सहानुभूति और वह भी अकस्मात् प्राप्त हुई सम्पत्ति के कारण उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। किन्तु वल्कलचीरी ने उत्तर दिया कि मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है।

इस पर फिर रथिक ने कहा कि,—इस आश्रम के महर्षि किसी को भी बिना द्रव्य लिये, आश्रय नहीं देते। अतएव यह द्रव्य देकर कहीं आश्रय प्राप्त करना। इसपर वल्कलचीरी ने उसे स्वीकार कर लिया।

चौथा परिच्छेद

वल्कलचीरी ने पोतनपुर में प्रवेश किया और वहाँ ऊँचे एवं विशाल भवनों को देखकर वह दिग्मूढ़ बन गया। **ऐसे बड़े आश्रम** और इतने महर्षि! आश्चर्य है ! फिर भी वह राजमार्ग पर चलता हुआ बीचमें मिलनेवाले सभी मनुष्योंको **महर्षि !** मैं आपको नमस्कार करता हूँ ! कहकर हाथ जोड़ता, आगे बढ़ने लगा। किन्तु थोड़ी ही देर में उसके पीछे लोगोंकी एक टोली-सी लग गई और सब लोग उसका उपहास करने लगे। पर वल्कल चीरीका इस उपहास की ओर ध्यान ही न था और वह कुछ समझता भी न था, अतएव इतनी हँसी की जाने पर भी उसे क्रोध नहीं आया। अंतमें लोग उसे पागल समझकर अपने-अपने रास्ते चले गये।

इधर वल्कलचीरी मनमें यह सोचते हुये आगे बढ़ता गया कि,-मैं इस आश्रम में जाऊँ या उसमें ! इस प्रकार वह पोतनपुर में खूब भटका। किसी ने भी उसे न तो बुलाया और न यही पूछा कि तुझे कहाँ जाना है? वह भटकता-भटकता वेश्याओं के मुहल्ले में जा पहुँचा। किन्तु गृहस्थों के घरों की अपेक्षा वेश्याओं के द्वार अधिकतर खुले ही रहते हैं।

वल्कलचीरी ने समझा कि,—यहाँ के महर्षि आश्रय देनेवाले प्रतीत होते हैं। अतएव अत्यन्त थक जाने के कारण धनुष से छूटे हुये बाण की तरह एक वेश्या के घर में चला गया और किसीने भी रोक-टोक नहीं की।

वैसे भी वेश्याओं के घर में पहली बार तो रोक टोक होती ही नहीं; बल्कि प्रारंभ में तो आनेवाले का स्वागत ही किया जाता है। अर्थात् वेश्याओं के घर भटकने वालों के लिए रोक-टोक उनके जेब खाली हो जानेपर ही की जाती है।

युवा तापसको अपने घर में आया देखकर अत्यंत प्रसन्न चित्त हो वेश्या उसके सामने आयी। किन्तु उसे भी महर्षि मानकर वल्कलचीरी ने कहा,-तात! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

यह सुन वेश्या अपनी हँसी न रोक सकी।

मुझे एक कुटिया दो और किराये के लिये यह द्रव्य लो। यों कहकर वल्कलचीरी ने रथिक का दिया हुआ सब धन वेश्याके सम्मुख रख दिया।

यह आपकी ही कुटिया है। यों कहकर वेश्या ने वल्कलचीरी को एक कोमल आसन पर आग्रहपूर्वक बिठाया और दासी को आज्ञा दी कि अभी जाकर नाई को ले आओ!

बेचारे वल्कलचीरी ने बाल न कटवाने के लिए बहुत आनाकानी की। किन्तु वेश्याने उसे समझाने के साथ ही धमकी से काम लिया। जैसे तैसे हजामत तो बन गई। किन्तु जब स्नान के लिए वल्कल उतार कर वस्त्र पहनाना आरंभ किया; तो वह इस बात को न सह सका और एक अबोध बालक की तरह रो पड़ा। क्यों कि वेश्या के बलात्कार के सम्मुख वह क्रोध कर उसका सामना कर सकने की स्थिति में ही नहीं। अतएव रोते-रोते उसने कहा,—**"हे महामुनि ! मैंने अपने जन्मकालसे ही यह मुनिवेष धारण किया है इसलिए कृपा करके इसे मुझसे मत छीनिये!"**

"अरे भले मुनिपुत्र! इस आश्रम में अतिथिरूप में पधारनेवाले महर्षियों का स्वागत करने की हमारे यहाँ यही रीति है। तब तुम इसकी अवगणना क्यों करते हो? यदि तुम हमारी बात नहीं मानोगे तो यहाँ कुटियाँ भी नहीं मिल सकेगी और तुम्हारा दिया हुआ धन भी वापस नहीं मिल सकेगा।"

वेश्या की इस धमकीका आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा और आश्रय के लोभ से वल्कलचीरी भी चुप हो गया। मंत्र से वशीभूत हो जाने वाले सर्पकी तरह उसने मौन धारणकर लिया।

अततः वेश्याने खुद ही वल्कलचीरी के जटिल केशपाश में तैल डाला और उसके सम्पूर्ण शरीर पर भी तैल की मालिश कर अच्छी तरह मलमलकर स्नान कराया। इस प्रकार गरम और सुगन्धित जल से स्नान कराकर जब वेश्या ने वल्कलचीरी को वस्त्रालंकार से सुसज्जित किया; तब उस राजपुत्र की मुख कांति मनोमुग्धकर बन गई, और वह वेश्या उस आश्चर्यकारी गुलाबी सौंदर्य को देखती रह गई।

इस प्रकार वल्कलचीरी को तैयार कर वेश्या उत्साहपूर्वक विवाह की तैयारी करने लगी। और रात होने तक तो सभी प्रकार की तैयारी हो गई। अतः आसपासकी वेश्याओं तथा पुरोहित एवं बाजा बजाने वालों को बुलाकर वेश्याने तुरंतही विवाह विधि आरंभ कराई। अपनी एकमात्र पुत्री को उसने वल्कलचीरी के साथ ब्याह दिया। पुरोहित ने मन्त्रोच्चारण किया और वेश्याओं ने विवाह के गीत गाना आरंभ कर दिया। फलतः बाजों की ध्वनि से सारा मुहल्ला गूँज उठा।

रात्रि के प्रशान्त वातावरणमें बाजों की ध्वनि राजमहल तक जा पहुँची। शय्या में पड़े-पड़े पिताजी तथा भाई की चिन्ता से विकल प्रसन्नचन्द्र राजा ने उस वाद्य ध्वनि को सुन आश्चर्य चकित होकर कहा :—

"मेरे दुःख से जब सारा नगर दुःखी हो रहा है; तब यह कौन ऐसा लोकोत्तर सुखी है, जिसके यहाँ इस समय बाजे बज रहे हैं? अथवा वह कैसा स्वार्थी मनुष्य है जो लोगों की मनोभावना की पर्वाह नहीं

करता। मृदंग की ध्वनि भले ही उसे आनन्द प्रदान करती हो ; किन्तु मुझे तो यह मृदंग के प्रहार से भी अधिक अप्रिय जान पड़ती है।"

उस समय में राजा-प्रजा का सम्बन्ध कुछ और ही प्रकार का था। अर्थात् राजा प्रजा के प्रति वात्सल्य भाव रखता था, तो प्रजा भी राजा की भक्त थी। अतएव प्रजा को सुखी रखने के लिये राजा प्राणपणसे यत्न करता और राजा के दुःख को प्रजा अपनाही मानती थी।

बल-पूर्वक शोक मनवाने राजकीय आदेश भी उन दिनों नहीं निकाले *जाते थे। अतएव जब राजा प्रसन्नचन्द्रको* उस बाजेकी ध्वनि अच्छी न लगी तो उन्होंने अपना विचार अवश्य प्रकट किया, किन्तु बाजे बजवानेवाले को पकड़ लाने की आज्ञा नहीं दी। फिर भी राजा का इतना कहना ही बस था।

बात की बात में राजा के दुःख एवं वाद्य ध्वनि अप्रिय प्रतीत होने की बात उस वेश्या के कानों तक पहुँच गई। वह आनन्दातिरेकमें जो भान भूली हुई थी, उससे सचेत हुई और तत्काल उसने गान-तान बन्द करवा दिया। इसके बाद वह राजा के पास पहुंची। और उनके सम्मुख दोनों हाथ जोड़कर नम्रता से बोली,—

"नाथ ! मेरे भयंकर अपराध को क्षमा कीजिये।" बात असलमें यह थी कि, मेरे यहाँ एक दैवज्ञ (ज्योतिषी) आया था और उसने बतलाया था कि **"तेरे घर एक ऋषिवेशधारी युवक आवेगा। वह, भविष्य में राजा बनेगा। इसलिये अपनी पुत्री का तू उससे विवाह कर देना। सो आज सौभाग्य से एक ऋषिवेशधारी मेरे घर आ पहुँचा!"**

राजा प्रसन्नचन्द्रने एकदम खड़े होकर प्रसन्नता के साथ पूछा,-**वह कहाँ है ?**

"मेरे घरपर ही है, देव! उस संसार-व्यवहारसे सर्वथा अजान ऋषिकुमार के साथ मैंने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया! और उस विवाह के निमित्त ही मेरे यहाँ गीत गाये जा रहे थे और बाजे भी बज रहे थे। आपके दुःखका मुझे जरा भी पता नहीं था। इसीलिए मुझसे यह भूल हुई है। अतएव मेरी इस धृष्टताको क्षमा कीजिये, कृपानाथ!"

वेश्या जब इस प्रकार क्षमा-याचना कर रही थी; उस समय राजा किसी दूसरे ही विचार में मग्न थे। उन्होंने सोचा कि,–**कहीं वह मेरा भाई ही तो नहीं है? संभव है, वही हो! नहीं-नहीं, वह कैसे हो सकता है?- –फिर भी पता तो लगाया जाय!**

तत्काल ही राजा प्रसन्नचन्द्र ने उस वेश्या के घर उन व्यक्तियों को भेजा, जो कि पहले उसे देख चुके थे! थोड़ी ही देर में उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करते हुए राजा को उन लोगों ने वापस आकर सूचना दी कि **ऋषि कुमार वही हैं।**

राजा के आनन्द की सीमा न रही। वे समस्त दुःखों को भूलकर हर्षोन्मत्त बन गये। वायु-वेग की तरह यह समाचार सारे नगर में फैल गया और नगरजन भी हर्ष से नाच उठे। उस महोत्सवमय बने हुए नगर में पत्नी बनी हुई वेश्यापुत्री के साथ हाथी पर बैठे हुये वल्कलचीरी को नगर में घुमाकर राजा अपने महल में ले गये।

वल्कलचीरी का पता लग जाने से आनन्द और उत्साहमग्न राजा प्रसन्नचन्द्र ने उसे समस्त संसार व्यवहार से परिचित कर दिया। भला, जब जंगली पशुओं को भी उचित रूप से सिखा कर संसारी बनाया जा सकता है; तो फिर वल्कलचीरी तो चाहे जितना मुग्ध होनेपर भी था तो मनुष्य ही।

फलतः व्यवहार-कुशल बन जाने वाले वल्कलचीरी को राजा प्रसन्नचन्द्र ने राज्यशासन सौंपकर अनेक राज-कुमारियों के साथ उसका विवाह कर दिया। इस प्रकार अब वह भोग-मय जीवन व्यतीत करने लगा।

एक बार कोतवाल चोरी के आरोप में एक मनुष्य को पकड़कर लाया। किन्तु उसे देखते ही वल्कलचीरी ने पहचान लिया। अर्थात् उसे मार्ग में जो रथिक मिला था, वह वही था। चोर का दिया हुआ जो द्रव्य उसने ग्रहण किया था, उसे बाजार में बेचने के लिए जाने पर सिपाही ने सन्देह में पकड़ लिया था। वल्कल चोरी को स्मरण हुआ कि,–**इसी ने मुझे पोतनपुरका मार्ग बतलाया था और इसी ने मुझे लड्डू खाने को दिये थे। तथा इसी ने मुझे वह द्रव्य भी दिया था।** उसने सोचा कि यह तो मेरे साथ विशेष

रूपसे उपकार करनेवाला है। अतएव तत्काल ही कोतवालको आज्ञा देकर उसे छुड़ा दिया। इसके बाद उसे अपने पास बुलाकर चोर से मिला हुआ द्रव्य जिस किसी का हो उसे दे देने को कहा। और सबको यह हित शिक्षा भी दी कि कोई भी व्यक्ति चोरी का द्रव्य न ले। साथ ही उसके निर्वाह के लिए आवश्यकता से अधिक सामग्री भी वल्कलचीरी ने उसे भेंट की। उत्तम आत्माएँ किसी के थोड़े से उपकार को भी नहीं भूलतीं और समय आनेपर छोटे-से उपकार का बदला बहुत बड़े उपकार के रूप में चुकाते हैं।

वल्कलचीरी विषय भोग में इस प्रकार लीन हो गये कि बारह वर्ष का समय न जाने किधर निकल गया, और उन्हें पता तक न लग सका। किन्तु एक दिन अर्धरात्रि के समय उनकी नींद खुल गई और इस कारण एकान्त में विचार करते हुये उनके अन्तर में भयंकर खलबली मच गई। वे सोचने लगे,— मैं कितना अभागा हूँ कि जन्म के बाद तत्काल ही माता चल बसी। वन में रहते हुये भी पिताजी ने मेरा पालन-पोषण किया। भला, मेरे लिये उन्होंने क्या-क्या नहीं किया होगा? मेरा शौचकर्म उन्होंने किस प्रकार किया होगा? अपनी गोदी में बैठाकर मुझे कितनी बार घुमाया होगा? मुझे जिलाने और आनन्द में रखने के लिये उन्होंने कौन सा कष्ट नहीं सहा होगा? किन्तु इन सब उपकारों के बदले में मुझ पापी ने क्या किया? जब मैं अपने साथ किये गये उपकारों का बदला चुकाने योग्य हुआ ; तब दुर्भाग्य मुझे यहाँ खींच लाया और यहाँ आकर भी पापी के समान मैं विषय-वासना में फँसकर उन सबको भूल गया। इन्द्रियों की परवशताने ही मुझे इस जाल में फँसा दिया। रसलोलुप बन कर मैंने पिताजी को छोड़ दिया और विषय सुखका कीड़ा बनकर मैंने उन उपकारों का स्मरण तक नहीं किया। तो क्या मैं माता-पिताको केवल कष्ट देने के लिये ही जन्मा था? इस जन्म में अब मैं पिताजी की चाहे जितनी सेवा करूँ तोभी उनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। मेरे पापों के कारण तो वह ऋण कीड़ीसे कुञ्जर जैसा ही बन गया है। इन विचारों ने वल्कलचीरी के हृदय को मथ डाला।

इस प्रकार वल्कलचीरी ने अत्यन्त दुःखित हृदय से रात्रि व्यतीत की। प्रभात होते ही वह राजा प्रसन्नचन्द्र के पास पहुँचा और कहने लगा—

"मुझे आज्ञा दीजिये। पूज्य पिताजी के दर्शन करने के विषय में मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ गई है। अतः मैं अभी ही वहाँ जाने की इच्छा करता हूँ।"

भाई ! वे जिस प्रकार तेरे पिता हैं, उसी प्रकार मेरे भी पिता हैं। मैं भी उनके दर्शन करने को उत्सुक हो रहा हूँ। चलो, हम दोनों साथ चलें।

दोनों भाई अनेक सुभट अंगरक्षकों को साथ लेकर उस वन में आश्रम के निकट जा पहुँचे। जहाँ सोमचन्द्र ऋषि निवास करते थे।

रथ में ही उतरते ही वल्कलचीरी को अनुभव हुआ, मानों खोया हुआ खजाना ही फिर मिल गया हो। उसने प्रसन्नचन्द्र से कहा—

सचमुच इस तपोवन को देखते ही मुझे तो राज्यलक्ष्मी तृण के समान प्रतीत होती है। देखो, ये सरोवर, जहाँ कि मैं हँस की तरह खेलता था। और उन वृक्षों को देखो, जिनपर चढ़कर मैं बन्दर की तरह फल खाता था और देखो उन मृगों को, जो धूल में खेलते हुए मेरे मित्र बन गये थे। इसी प्रकार उन भैंसों को देखो, जिनका दूध पीकर मैं बड़ा हुआ। बन्धुवर ! वह सुख ही कुछ और था। वन के उन सुखों का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ? अन्य पिताजी की सेवा का एक सुख ऐसा है, जिसकी तुलना में राजसुख पास में भी नहीं ठहरता।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराजचरित्र

सूर्य उदयाचल से ऊपर उठता हुआ आकाश के मध्य-प्रदेश में जा पहुंचा था। कड़ी धूप से तपी हुई जमीन लोगों के गमनागमन में बाधा पैदा करती थी। लोगों के शरीर से पसीना निकल कर गर्म हवा के झोंकों को ठंडा कर देता था। ऐसे मध्याह्न में महाराजा प्रतापसिंह दीपशिखा के देवोपम वैभव संपन्न सुसराल में आनन्द-मौज कर रहे थे। खस की टट्टियां लगी हुई थी गुलाब जल छिड़का जा रहा था। गुलाब के इत्र की महक दूर-दूर तक के पदार्थों को सुवासित कर रही थी। महाराजा अपने आराम गृह में आराम कर रहे थे।

इस प्रसंग में राजा दीपचन्द्र देव अपनी भतीजी चन्द्रवती के पति राजा शुभगांग के भेजे हुए दूत को लेकर महाराजा की सेवा में उपस्थित हुए। परस्पर में एक दूसरे का अभिवादन करते हुए राजा दीपचन्द्र ने महाराजा से दूत का परिचय कराया। दूत ने राजकीय ढंग से महाराजा को प्रणाम किया। अपने आगमन का कारण बड़े रोचक ढंग से महाराजा की सेवा में इस प्रकार निवेदन किया :—

"देव ! यहां से कुछ दूर वासुतिका नाम की एक बड़ी अटवी है। उसमें भीलों का स्वामी शूर नाम का पल्लीपति शासन करता है। आज तक कोई राजा उसे परास्त नहीं कर सका है। उसकी अटवी के पश्चिम की ओर सिंहपुर नाम का एक सुन्दर नगर हैं। उसमें श्री शुभगांग नाम के राजा राज्य करते हैं। राजा दीपचन्द्र देव की भतीजी श्रीमती चन्द्रवती देवी उनकी पट्टरानी हैं।

एक समय कुछ चोर मौका पाकर राजा के महल में घुस गये, और रानी जी के एकावली हार को चुराकर ले गये। मालुम होने पर सिपाहियों ने पद चिन्हों के आधार पर उनका पीछा किया, और कुछ दूर पर माल सहित वे पकड़ लिये गये। दण्ड के लिये राजा के सामने उनको पेश किया। राजा ने उन्हें काफी कड़ा दण्ड देने की आज्ञा दी। तरह तरह की कठोर यातनाओं से व्याकुल होकर उन चोरों ने साफ-साफ कह दिया कि हम शूरपल्ली पति के अनुचर हैं। उसी की आज्ञा से हमने यहां चोरी की है।

चोरों की इस बात को सुनकर राजा साहब को बड़ा क्रोध चढ़ा। चोरों से एकावली हार को लेकर शहर कोतवाल को यह आदेश दिया कि इन्हें कारागार में बन्द कर दो। कोतवाल ने भी महाराज की जो आज्ञा-कह कर उन सबको जेल भेज दिया।

जब ये समाचार पल्लीपति को मालुम हुआ वह बहुत बिगड़ा! एकदम एक बहुत बड़ी सेना लेकर उसने सिंहपुर को घेर लिया। ऐसी स्थिति में रक्षा का कोई दूसरा उपाय न देखकर मुझे दूत बना कर आपकी सेवा में भेजा है। मैंने भी आपके सामने वास्तविक स्थिति को रखकर अपना कर्तव्य पालन किया है। इसके आगे जैसा आप उचित समझें वैसा करें। आप हमारे शिरोमणि हैं।

इतना कह कर दूत के चुप हो जाने पर राजा दीपचन्द्र देव ने भी उसके वचनों का समर्थन करते हुए कहा महाराज! वास्तव में बात ऐसी ही है। इस दुष्ट पल्लीपति के आतंक से यह दीपशिखा भी अत्यन्त भयभीत है। इसका सारा कारोबार करीब-करीब ठप्प सा हो गया है। लोग इच्छानुसार व्यापार नहीं कर पाते। मार्ग इतने दुर्गम बन गये हैं, कि यात्री उधर से निकलने का साहस नहीं करते।

इस प्रकार दोनों की बातें सुनकर महाराजा प्रतापसिंह की आंखे लाल हो गई। भौंह धनुष की तरह तन गई। भुजायें फड़कने लगी और अपने दांतो से ओष्ठ काटते हुए वे बोले—राजन् ! दुष्ट लोग बिना किसी घोर प्रतिक्रिया के शान्त नहीं होते अतः इस जंगली भील को आगे बढ़ने से पहिले पील देना चाहिये। रण भेरी बजाने की आज्ञा दे दीजिए। मेरी और आपकी सेनाओं को आक्रमण के लिये तैयार कीजिये।

महाराजा की आज्ञा पाते ही राजा दीपचन्द्र ने प्रधान सेनापतियों को अपनी-अपनी सेना सजाने के लिये आदेश दिया। बस फिर क्या था? रणभेरी बज उठी रण बांकुरे सिपाही अपने अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित सैनिक वेश में नियत स्थान पर एकत्रित होने लगे। सूर्य की रोशनी में उनके कवच और शस्त्र चमाचम चमक रहे थे। हाथियों की चिंघाड़ और घोड़ों की हिनहिनाहट के साथ सुभटों की सिंह गर्जना से दशों दिशाएं मुखरित हो उठी। थोड़ी ही देर में चतुरंगिणी फौजें प्रयाण के आदेश की प्रतीक्षा में तैयार हो गई। विशाल काय तोपें अपनी भयानक मूर्तियों से दर्शकों के दिल को दहला देती थी।

इधर महाराजा प्रतापसिंह और राजा दीपचन्द्र भी अपने सैनिक वेश में वहां पहुंचे। उनके सम्मान में तोपचियों ने तोपें दाग कर दोनों का स्वागत किया। महाराज की आज्ञा पाते ही सेना ने अबाधगति से सिंहपुर की तरफ कूच कर दिया। सिंहपुर के समीप एक सुन्दर नदी के किनारे शत्रुओं की चोट बचाकर डेरे डाल दिये गये।

भील राजा शूर के गुप्तचरों ने इन समाचारों से अपने स्वामी को परिचित किया। उसने भी अपने बूढ़े भील सरदारों को एकत्रित करके पूछा कि क्या करना चाहिये? उन्होंने कहा बलवान शत्रु के सामने से भाग जाना ही उचित होता है। भील राज शूर को उनकी यह सलाह पसन्द न आई। वह स्वयं एक वीर योद्धा था। कायरता पूर्ण भाग जाने की अपेक्षा शत्रु से दो दो हाथ करके रणभूमि में सदा के लिये सो जाना ठीक समझता था। उसने अपने सनिकों को अपना निर्णय सुना दिया। स्वामी की उत्तेजनात्मक प्रेरणा से प्रेरित हो सभी लड़ने को तैयार हो गये। श्रेष्ठ गंधहाथी की पीठ पर चढ़ा हुआ भीलराज शूर अपनी शबर सेना के साथ बड़े वेग से समर भूमी में जा पहुँचा।

इधर महाराजा प्रतापसिंह भी अपने शत्रु को परास्त करने के लिये रण-भूमि में आ डटे। ज्योंही उन्होंने अपनी फौज को देखा तब उन्हें मालूम हुआ कि सेना के सारे हाथी मद रहित निद्राग्रस्त से हो रहे हैं। आश्चर्य में डूबे महाराजा ने राजा दीपचन्द्र से इसका कारण पूछा कि यह क्या बात है? उन्होंने कहा देव ! भीलराजा शूर का हाथी-गंध हाथी है जिसकी गंध से ये सारे हाथी मद रहित हो गये हैं। महाराजा इस बात को सुनकर कर्तव्य मूढ से हो गये।

इसी समय रथ विद्या में निपुण कलावान् ने महाराज से अर्ज की, आप रथ पर सवार होकर मेरी भी कला देखियें। उसकी इस बात को सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और अपना दिव्य धनुष लेकर रथ पर सवार हो गये। अब क्या था ! रण का बाजा बज उठा। युद्ध प्रारम्भ हो गया। रथियों से रथी, पैदलों से पैदल और सवारों से सवार भिड़ गये। तोपें भी भीषण आग उगलने लगी। जिस हाथी के गोला लग जाता था वह वहीं ढेर हो जाता था। घोड़े सवार सहित घायल हो जाते थे और पैदलों से तो मैदान का मैदान साफ हो जाता था।

सारथी ने महाराजा के रथ को शत्रु की ओर बढ़ाया। महाराजा की बाण वर्षा से परेशान हुआ भीलराजा शूर भागने की चेष्टा में हाथी को घुमाने लगा पर सारथी ने रथ को उसके चारों ओर इस प्रकार घुमाया कि वह भाग न सका। दोनों वीरों में घोर घमासान युद्ध होता रहा। दोनों एक दूसरे को हराने की चेष्टा में थे, पर अन्त में महाराज ने उसे अपने वाणों से क्षत-विक्षत करके हाथी पर से गिरा दिया और जीवित पकड़ कर उसे लकड़ी के पिंजड़े में डाल दिया। उसके जयकलश नाम के गंधहाथी को अपने वश में करके महाराजा ने दूसरे भील सामन्तों को भी काबू में किया। बिना नायक की भील सेनायें हताश होकर भाग गई।

चारों ओर विजय दुंदुभियाँ बजने लगीं। जय ध्वनि सुनाई देने लगी घेरा टूटने पर शुभगांग राज ने भी नगर के बाहर आकर महाराजा को बड़े आदर के साथ प्रणाम किया। महाराजा ने भी उन्हें अनेक प्रकार से सम्मानित करके अपनी उदारता का परिचय दिया।

बाद में उस भीलराजा शूर को अपने साथ लेकर महाराज ने उस वासुतिका अटवी में प्रवेश किया। उस पल्ली पर अपना आधिपत्य जमा कर एक मुड़ा (१६ मण) मोती और छप्पन करोड़ सोना मोहरें दण्ड के रूप में प्राप्त की। शेष सब धन राजा दीपचन्द्र और राजा शुभगांग को दे दिया। पल्ली से प्राप्त बहुमूल्य वस्तुएँ, कपड़े और धन सैनिकों में भी यथा योग्य रूप से वितरित किया गया। इस प्रकार विजय-वरमाला पहन कर महाराजा प्रतापसिंह अपने साथियों के साथ बहुत प्रसन्न हुए।

महाराजा ने अपने सभासदों के सामने उन चार कलाविज्ञों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए महाराजा ने उन चारों को बहुमूल्य पुरस्कारों से पुरस्कृत किया।

उस अटवी को महाराजा ने साफ करवा दिया। वहाँ रानी सूर्यवती के नाम से सूर्यपुर नाम का एक सुन्दर नगर बसा दिया। दोनों राजाओं को बड़े-बड़े भूखण्ड भेंट किये। राजा शुभगांग के आतिथ्य को स्वीकार करते हुए महाराजा सिंहपुर पधारे। वहां थोड़े दिन विश्राम करके शुभगांग से विदा लेकर राजा दीपचन्द्र देव के साथ पुनः दीपशिखा नगरी में महाराजा लौट आये।

दीपशिखा में विजयी योद्धा के वेश में प्रवेश करते हुए महाराजा का भारी स्वागत हुआ। शूर दस्यु के संताप की समाप्ति से सबकी अन्तरात्मा

हृदय से आशीर्वाद दे रही थी। पुष्पवृष्टि और जयनादों के बीच महाराज अपने निवास स्थान पर पहुँचे। महारानी सूर्यवती ने मांगलिक वस्तुओं से भरे थाल को लेकर द्वार पर महाराज को बधाये। और आरती उतार कर महाराजा को महल में प्रवेश कराया। दान-मान-सम्मान से संतुष्ट हुई प्रजा ने अपने जीवन को उस रोज धन्य माना।

मनुष्य के जीवन में जननी और जन्म भूमि की महत्ता अवर्णनीय है। जन्म भूमि का आकर्षण हृदय में इतना अधिक हुआ करता है इसका प्रधान कारण है वहां अपने आदमी रहते हैं। अपनों से रहित देश काणीपीठ कहा जाता। इसी लिये जन्म भूमि के मुकाबले स्वर्ग कमजोर माना जाता है।

उसी जन्म भूमि की याद महाराजा को भी आने लगी। अपने श्वसुर राजा दीपचन्द्र देव से कुशस्थल को लौटने की इच्छा प्रकट की। राजा ने कुछ दिन और ठहरने का अनुरोध किया। मगर उन्होंने अधिक ठहरने में अपनी असमर्थता जाहिर करते हुए राजा दीपचन्द्र के प्रति अनुपम आदर की भावना व्यक्त की।

राजा ने अपने सामर्थ्यानुसार अपनी पुत्री को हाथी, घोड़े, दास, दासियां सोने और रत्नों के आभूषण, बहुमूल्य पोशाकें आदि देने योग्य वस्तुओं को दहेज में देकर सेन्द्री आदि सखियों के साथ उसे विदा किया। राजा रानी राज्य के उच्च कर्मचारी और प्रियजन सभी अपनी राजकुमारी महारानी सूर्यवती को पहुँचाने के लिये साथ चले। शास्त्र, वचन और लौकिक रिवाज के अनुसार पद्म सरोवर के आने पर सब वहां ठहर गये।

यथास्थान पड़ाव पड़ गया। सभी अपने-अपने काम में लग गये। महारानी सूर्यवती अपने माता-पिता से दिल खोलकर मिली। अपने प्रियजनों को रुलाती हुई स्वयं आंसू भर लाई। सबने उसे अंतःकरण से अनेकों प्रकार के आशीर्वाद दिये। उसने अपने स्नेहमय हृदय को कड़ा करके अपने माता-पिता से अस्फुट स्वर में विदा मांगी।

माता-पिता उस अपनी लाडली बेटी की वियोग व्यथा से विह्वल हो उठे। उन्होंने जिसे आज तक प्यार से पाला पोसा था, जिसे देखकर वे फूले न समाते थे, जिस पर वे प्राणों को भी न्योछावर करने में नहीं हिचकिचाते थे, वही आज उनके स्नेह बन्धन को ढीला कर उनसे प्रथमवार विदा हो रही थी।

दृश्य बड़ा करुणोत्पादक था। सबकी आंखों में आंसू थे। सबकी वाणी मारे सिसकियों के मूक हो गई थी। राजकुमारी माता-पिता के चरणों का अपने अश्रुजल से प्रक्षालन कर रही थी। उसके सिर के बाल माता-पिता के नेत्रों से गिरे हुए आंसुओं से गीले हो चुके थे। आखिर राजा ने अपने अन्तस्थल को कड़ा करके राजकुमारी के सिर पर हाथ रखते हुए कुलीन स्त्रियों के योग्य शिक्षा देते हुए बोले बेटी !

शूश्रूषस्व गुरून्कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नी-जने,
भर्तुविप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गम :।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येस्वनुत्सेकिनी,
यान्त्येवं गृहणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ।।

गुरूजनों की सेवा करना। सौतों के साथ प्रियसखियों का सा व्यवहार करना। कदाचित् पति द्वारा तिरस्कृत होने पर ईर्ष्या से कभी उनके विपरीत मत चलना। परिजनों में चतुराई बरतना साथ ही सेवकों पर अनुग्रह रखना। अपने बड़े भाग्य पर कभी गर्व मत करना। ऐसा करने वाली स्त्रियाँ ही गृहिणी पद के अधिकार को प्राप्त करती हैं। इसके विपरीत आचरण करने वाली दूसरी स्त्रियाँ उभय कुल को लजानेवाली होती हैं।

बेटी ! मेरे इस उपदेश को हृदय में सदा धारण रखना। अपने अच्छे आचरणों से उभय कुल की कीर्ति को बढ़ाना। कभी-कभी हमको भी अपना स्वजन जानकर अवश्य याद करती रहना।

महाराजा प्रतापसिंह की तरफ मुख करके उन्हें भी अपनी बेटी की भोलावण बड़े भाव भरे शब्दों में की। इस प्रकार स्नेह की सरिता बहाते हुए राजा दीपचन्द्र अपनी बेटी को विदा दे दीपशिखा की ओर परिवार के साथ लौट पड़े। वे सर्वस्व खोये हुए व्यक्ति की तरह बेसुध चले जाते थे। चलते-चलते रुक गये, घूमकर पीछे की ओर देखा सूर्यवती आंखों से ओझल हो चुकी थी। वे लम्बी और गरम सांस लेते हुए बोले :—

अर्थोहि कन्या परकीय एव
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विसदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।।

निश्चय ही कन्या-धन पराया धन है। आज उसे अपने पति के घर भेज कर धरोहर वापस लौटा देनेवाले के जैसे मेरी अन्तरात्मा अत्यन्त प्रसन्न और बोझ से हल्की हो गई है।

महाराजा प्रतापसिंह महारानी सूर्यवती को साथ लेकर कुशस्थल की ओर चल पड़े। थोड़े ही दिनों में कुशस्थल के बाहरी उपवन में जा पहुँचे। उनके आगमन की खुशी में सारा शहर तरह-तरह से सजाया गया। भारी उत्सव मनाया गया। महाराज शुभ मुहूर्त में नई महारानी के साथ नगर में प्रविष्ठ हुए। जनता ने उनका हृदय से स्वागत किया। महाराज नगर के मुख्य राज-मार्ग से होकर अपने विशाल महल में जा पहुँचे। वहां एक बड़ा भारी दरबार लगा और राजकीय रीत रिवाज संपन्न होने पर सब अपने-अपने घर चले गये।

राज-काज में फिर पहले की ही तरह महाराज व्यस्त हो गये। उनकी प्रशस्त न्याय नीति से सारी प्रजा पहले से भी अधिक उन्हें चाहने लगी। अपने प्राचीन पुण्यों के प्रभाव से माननीय भोग भोगते हुए महाराज बड़ी ही निश्चिन्तता से राज-काज चलाने लगे। सच है पुण्य से क्या नहीं होता?

सुकुल जन्म-विभूतिरनेकधा,
प्रिय-समागम-सौख्य-परम्परा।
नृपकुले गुरुता विमलं यशो,
भवति पुण्य-तरोः फलमीदृशम् ।।

उच्चकुल में उत्पत्ति, अनेकों प्रकार के ऐश्वर्य, प्रियजनों का समागम, निरन्तर रहने वाला सुख, राज-कुल में गौरव और निर्मल यश ये सब पुण्य रूपी वृक्ष के ही तो फल है।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAM.
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007.
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street. Kolkata 700 016

Tel : 229 8228. Fax : 229 3882. 245 7562

e-mail : info@subhash.com. website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228. Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Ulsoor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply. fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres. no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible. on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare. then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment. we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental. infrastructural. civil and power projects. The truth is we design. build. operate and maintain with equal skill. Moreover. we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put. we are a single point responsibility. A one stop shop.

So. next time. somebody suggests that deserts by definition connote dryness. you recommend he visit us for a lesson in reality.

In
Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad
&
Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons
21, Kali Krishna Tagore Street
Kolkata - 700 007
Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
(It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism — Price : Rs.

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 9 TITTHAYARA December 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225